अलौकिक अद्वितीय
मुरज बंध

रचयिता

आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज

दोहा : मुरज – बंध

द र्श न से हो ध र्म म य भ व सु ख सुं द र मा न।

द र्श न से हो क र्म क्ष य शि व सु ख सुं द र जा न॥ २१५॥

सम् यग द र्श न है ज हाँ व हाँ सु ख द कल् या ण।

सम् यग द र्श न हो ज हाँ व हाँ सु ख द सुध् या न ॥ २१६॥

दोहा : मुरज - बंध

वि न य मु क्ति का द्वा र है मि ल ता शि व सु ख जा न।

वि न य मु क्ति का गा र है फ ल ता ध्रु व सु ख मा न॥ २३७॥

ब न वि नी त सु ख धा म स ह तु झे मि लें गु ण वा न।

ब न वि नी त सु ख ना म स ह तु झे मि लें गु ण गा न॥ २३८॥

दोहा : मुरज - बंध

शी ल र हि त उ स को क हीं क ब मि ल ता है मो क्ष।

शी ल स हि त उ स को व हीं त ब मि ल ता है मो क्ष॥ ३४२ ॥

व्र त शी लों में भू ल ते र ह ते भ व में ली न।

व्र त शी लों में झू ल ते र ह ते स् व में ली न॥ ३४३ ॥

दोहा : मुरज – बंध

रा ग ज्ञा न भ व का र हे जा नो भ वि है मू ल।

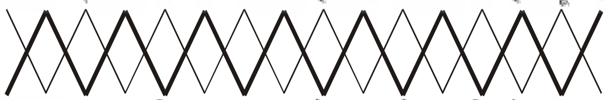

त्या ग ज्ञा न शि व का र हे मा नो भ वि है मू ल ॥ ३५४ ॥

ज्ञा नी ज ग में दें ज हाँ क्ष म ता सु ख वे पू र।

ज्ञा नी म ग में दें व हाँ स म ता सु ख भी पू र ॥ ३५५ ॥

दोहा : मुरज - बंध

सं वे गी ब न जा य जो वो जा ये भ व पा र।

सं वे गी ब न भा य जो वो पा ये शि व गा र ॥ ३६८ ॥

सं वे गी जि त ना ब नें आ त म का स म जो य।

सं वे गी कि त ना ब नें आ त म का ग म खो य॥ ३६९ ॥

दोहा : मुरज – बंध

क हीं पू ज ते लो क में रा गी ज न वे रा ग।

क भी पू ज ते लो क में त्या गी ज न ना रा ग ॥ ३८६ ॥

रा गी जी व न में क दा पा ते ना आ रा म।

त्या गी जी व न में स दा पा ते वे आ रा म ॥ ३८७ ॥

दोहा : मुरज - बंध

त प क र ता नि त सा धु व ह पा ता भ व दु ख पा र।
ज प क र ता नि त सा धु ब ह पा ता शि ब सु ख सा र ॥ ४३० ॥

त प स म सु न्द र लो क में न हीं दू स रा का म।
ज प स म सु न्द र लो क में न हीं दू स रा ना म ॥ ४३१ ॥

दोहा : मुरज - बंध

क रें ज हाँ जो सा धु की स मा धि सु न्द र जा न।

व रें व हाँ वो सा धु भी स मा धि सु न्द र मा न ॥ ४५१ ॥

जा ती म म ता ब ह र हे ज हाँ स मा धी जा प।

आ ती स म ता ब ह र हे ब हाँ स मा धी आ प ॥ ४५२ ॥

दोहा : मुरज - बंध

वै या वृ त्त्य सु सा धु की दे ती सु ख दा धा म।

वै या वृ त्त्य सु सा धु की थो ती दु ख दा ना म ॥ ४७१ ॥

से वा उ त्त म श क्ति दे ज हाँ स फ ल हो ध्या न।

से वा उ त्त म भ क्ति दे व हाँ वि फ ल हो मा न ॥ ४७२ ॥

दोहा : मुरज - बंध

क रें भ क्तिअ रि हं त की ज हाँ पा प धु ल जा य।

क रें भ क्तिअ रि हं त की म हाँ जा प मि ल जा य ॥ ५५० ॥

म न से पा व न जो ब नें हो य भ क्तिअ रि हं त।

त न भी पा व न ये ब नें दे यँ श क्तिअ रि हं त ॥ ५५१ ॥

दोहा : मुरज - बंध

च र्या स ह आ चा र्य हैं स दा क रें उ प का र।

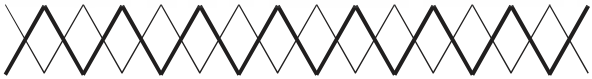

च र्या स ह आ चा र्य वे स दा ह रें अ प का र ॥ ५६९ ॥

सू रि गु णी शु भ ना म से ज न ये मं ग ल गा य।

सू रि गु णी शु भ धा म हैं व न में मं ग ल भा य।॥ ५७० ॥

दोहा : मुरज - बंध

ब हु श्रु त की वं द न ज हाँ आ य ध्या न यु त ज्ञा न।

ब हु श्रु त की वं द न व हाँ जा य मा न यु त ज्ञा न ॥ ५७९ ॥

रा ग ज्ञा न ज्ञा नी क हें ब ह दु ख का है मू ल।

त्या ग ज्ञा न ज्ञा नी क हें ब ह सु ख का है चू ल ॥ ५८० ॥

दोहा : मुरज - बंध

हो प्र व च न अ र्च न ज हाँ ज्ञा न आ य दु ख जा य।

हो प्र व च न अ र्च न व हाँ मा न जा य सु ख आ य ॥ ५९१ ॥

जि न वा णी मा ता ह में दे शु भ शि व जो धा म।

जि न वा णी मा ता ह में दे शु भ रु व जो रा म। ॥ ५९२ ॥

दोहा : मुरज - बंध

य ति आ व श्य क पा ल ते क ह ते रा म सु ने क।

य ति आ व श्य क टा ल के ग ह ते का म न ए क ॥ ६०६ ॥

आ व श्य क प ल ते ज हाँ व हाँ अ लौ कि क म र्म।

आ व श्य क प ल ते व हाँ ज हाँ न लौ कि क क र्म ॥ ६०७ ॥

दोहा : मुरज - बंध

मा र्ग प्र भा व न हो व हाँ ज हाँ सु नि य मि त ध र्म।

मा र्ग प्र भा व न हो क हाँ ज हाँ अ नि य मि त क र्म ॥ ६२० ॥

मा र्ग प्र भा व न नि त क रें अ न्त र सु ख उ ग जा य।

मा र्ग प्र भा व न हि त क रें अ न्त र दु ख भ ग जा य ॥ ६२१ ॥

दोहा : मुरज - बंध

र हे ध र म वा त्स ल्य म य मि ले ध र्म सु ज्ञा न।

ग हें ध र म वा त्स ल्य म य खि ले ध र्म सं ज्ञा न ॥ ६३२ ॥

क रें लो क अ प का र ज न न हीं ध र्म प ह चा न।

क रें लो क उ प का र ज न य हीं ध र्म प ह चा न ॥ ६३३ ॥

दोहा : मुरज - बंध

सो ल ह भा व न से स भी भ व सु ख पा ते अं त।

सो ल ह भा व न से क भी शि व सु ख पा ते सं त ॥ ६९९ ॥

ती र्थ क र प द वी ज हाँ दु ख भ य स ब भ ग जा य।

ती र्थ क र प द वी व हाँ सु ख म य स ब ज ग भा य ॥ ७०० ॥

काव्य संपूर्ण

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का

जीवन परिचय

पूर्व नाम - पारसचंद जैन
पिता जी - श्री शिखरचंद जैन
माता जी - श्रीमती मायाबाई जैन
जन्मतिथि - 11.9.1967, भाद्र शु. अष्टमी
जन्म स्थल - फुटेरा कलाँ, जिला- दमोह
बचपन बीता - पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
शिक्षण - बी.ए. (प्रथम वर्ष) डिग्री कॉलेज, दमोह (म.प्र.)
ब्रह्मचर्य व्रत - 19.12.1984, अतिशय क्षेत्र, पनागर (म.प्र.)
सातवीं प्रतिमा - 1985, सिद्धक्षेत्र अहारजी (म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा - 8.11.85, सिद्धक्षेत्र अहारजी (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा - 10.7.1987, अतिशय क्षेत्र थूवोनजी
मुनि दीक्षा - 31.3.1988, सि.क्षे. सोनागिरजी, महावीर जयन्ती।
दीक्षा गुरु - आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज
आचार्यपद - 25.01.2015 (माघ शुक्ल षष्ठी) को (समाधि पूर्व आचार्यश्री सीमंधरसागर जी द्वारा इंदौर में)

कृतियाँ व रचनाएँ

अध्यात्मिक प्रवचन, आर्जव कविताएँ, पर्युषण पीयूष, जैनागम-संस्कार (हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़, तमिल भाषा में), आगम-अनुयोग (भाग 1, 2), तीर्थोदय काव्य, लोक कल्याण विधान, सदाचार सूक्ति काव्य, ओम् योग ध्यान, पद्यानुवाद मञ्जरी (गोमटेश थुदि, भक्तामर स्तोत्र, द्रव्यसंग्रह, इष्टोपदेश, समाधितंत्र, वारसाणुवेक्खा, तत्त्वसार, प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका), मोक्ष प्रदायक काव्य (आत्मोद्धार शतक, सन्मार्ग प्रभावना काव्य, तीर्थंकर स्तुति शतक, सम्यक्‌ध्यान शतक, श्री अंतादि शतक, गुरु-गुण महिमा काव्य, आशीर्वाद शतक, धर्म भावना शतक, अध्यात्म समयोदय काव्य)